ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परंपरा के संवर्धन पर हुआ विशेष व्याख्यान

अभिलेखागारों में हमारा इतिहास धड़कन की तरह सुरक्षित है : कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

वर्धा, 23 जुलाई 2024: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र, झूंसी, प्रयागराज में सोमवार, 22 जुलाई को "भारतीय ज्ञान परंपरा के संवर्धन में अभिलेखागारों की भूमिका" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली में कार्यरत डॉ. नरेन्द्र शुक्ला उपस्थित रहे।

अपने व्याख्यान में डॉ. शुक्ला ने अभिलेखागार की निर्मिति पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में मस्तिष्क एक अभिलेखागार की तरह है। काल खण्ड का विभाजन करते हुए उन्होंने कहा कि बीता हुआ कल कंक्रीट की तरह होता है।

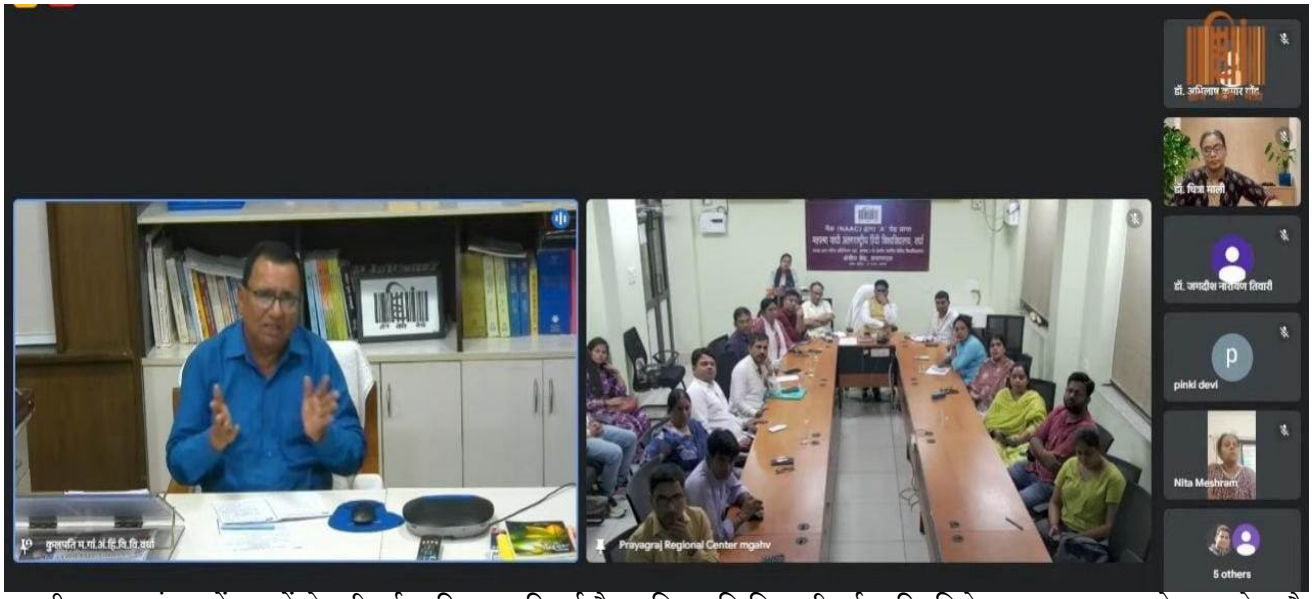

भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्यों के परिवर्तन की बात की गई है ना कि व्यक्तिनिष्ठ परिवर्तन की। विरोध का स्वर कला से शुरू होता है। भारत के जनजागरण इतिहास को ड्रामा के चश्मे से देखने की जरुरत है। उन्होंने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अखबारों की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया। सन् 1905 से 1935 का समय ज्ञान परंपरा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बढ़ने से लोकतंत्र की स्वतंत्रता बढ़ती है। डॉ. शुक्ला ने कहा कि इतिहास के भी अपने टूल्स हैं जिसके द्वारा ज्ञान का संयोजन एवं संवर्धन किया जाता है।

इस अवसर पर आभासी माध्यम से जुड़े माननीय कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में स्मृति की केंद्रीय भूमिका है। भारतीय ज्ञान परंपरा में सामूहिक स्मृति को मानस में एवं पीढ़ियों से चले आ रहे ज्ञान को संजोकर रखा गया है। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा ने सामूहिक स्मृति की परंपरा को सुरक्षित रखने का काम किया है। भारतीय नवजागरण के साथ साथ हिंदी नवजागरण में भी अभिलेखागारों की सार्थक भूमिका रही है। अभिलेखागारों में हमारा इतिहास धड़कन की तरह सुरक्षित है।

क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज के अकादमिक निदेशक प्रो. दिगंबर तंगलवाड़ ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि जो चिरंतर है वही निरंतर है और जो निरंतर है वही सनातन है। उन्होंने भारत को पुनः विश्व गुरु की ओर अग्रसर होते हुए परंपरा के संक्षण की बात की।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य फिल्म अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. यशार्थ मंजुल ने किया जिसमें उन्होंने मुख्य अतिथि का विस्तृत परिचय एवं प्राचीन कला के इतिहास में अभिलेखागारों को सेतु की तरह बताया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज के अकादमिक निदेशक द्वारा अतिथि का स्वागत विश्वविद्यालय का स्मृति चिह्न, पुष्प गुच्छ, सूत की माला एवं शाल भेंट कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन फिल्म विभाग की शोधार्थी अर्चना निगम ने किया तथा फिल्म अध्ययन विभाग की सहायक आचार्य डॉ. सुरभि विप्लव ने आभार माना। कार्यक्रम में डॉ. अवंतिका शुक्ला, डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. आशा

मिश्रा, डॉ. अख्तर आलम, डॉ. मिथिलेश कुमार तिवारी, डॉ. सत्यवीर, डॉ. विजया सिंह, डॉ. अनूप कुमार, डॉ. श्याम सिंह, जयेंद्र जायसवाल, सुभाष श्रीवास्तव, राहुल त्रिपाठी, राकेश यादव, मीनू त्रिपाठी, सृष्टि गुप्ता, रत्नेश कुमार त्रिपाठी सहित केंद्र के कर्मचारी, विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित थे।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

भारतीय ज्ञान परंपरेच्या संवर्धनात अभिलेखागारांची भूमिका या विषयावर व्याख्यान
आपला इतिहास संग्रहालयात सुरक्षित आहे : कुलगुरू प्रो. कृष्णकुमार सिंह

वर्धा, 23 जुलै 2024: भारतीय ज्ञान परंपरेत स्मृती महत्त्वाची भूमिका पार पाडते. भारतीय ज्ञान परंपरेत, सामूहिक स्मृती आणि पिढ्यानपिढ्याचे ज्ञान स्मृतीत जतन केले गेले आहे. भारतीय परंपरेने सामूहिक स्मृती परंपरा जपण्याचे काम केले आहे. भारतीय पुनर्जागरणात तसेच हिंदी पुनर्जागरणात अभिलेखागारांनी महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावली आहे. आपला इतिहास हा अभिलेखागारातील हृदयाच्या ठोक्यासारखा सुरक्षित आहे असे मत महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू प्रो. कृष्ण कुमार सिंह यांनी व्यक्त केले. ते विश्वविद्यालयाच्या क्षेत्रीय केंद्र, झुंसी, प्रयागराज येथे सोमवार, 22 जुलै रोजी "भारतीय ज्ञान परंपरेच्या संवर्धनात अभिलेखागाराची भूमिका" या विषयावर आयोजित विशेष व्याख्यानात अध्यक्ष म्हणून बोलत होते. यावेळी प्रमुख वक्ते म्हणून पंतप्रधान संग्रहालय आणि ग्रंथालय, नवी दिल्ली येथे कार्यरत डॉ. नरेंद्र शुक्ला उपस्थित होते.

डॉ. शुक्ला यांनी अभिलेखागार निर्मितीबाबत सविस्तर चर्चा करून सांगितले की भारतीय ज्ञान परंपरेत आपला मेंदू हा अभिलेखागारासारखा आहे. भारतीय ज्ञान परंपरा व्यक्तिपरक बदलाविषयी नव्हे तर मूल्यांमधील बदलाबद्दल बोलते. निषेधाचा आवाज कलेतून सुरू होतो. नाटकाच्या नजरेतून भारताच्या प्रबोधनाचा इतिहास पाहण्याची गरज आहे.

प्रयागराजचे अकादमिक निदेशक प्रो. दिगंबर तंगलवाड़ यांनी विषयाची ओळख करून देताना सांगितले की जे शाश्वत आहे ते सनातन आहे. भारताला विश्व गुरू बनवण्याच्या दृष्टिने परंपरा जपल्या पाहिजेत असे ते म्हणाले. स्वागत भाषण फिल्म अध्ययन विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. यशार्थ मंजुल यांनी केले. दीप प्रज्ज्वलनाने कार्यक्रमाचे उद्घाटन करण्यात आले. कार्यक्रमाचे संचालन फिल्म विभागाची शोधार्थी अर्चना निगम हिने केले तर फिल्म अध्ययन विभागाच्या सहायक प्रोफेसर डॉ. सुरभि विप्लव यांनी आभार मानले. कार्यक्रमात डॉ. अवंतिका शुक्ला, डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. आशा मिश्रा, डॉ. अख्तर आलम, डॉ. मिथिलेश कुमार तिवारी, डॉ. सत्यवीर, डॉ. विजया सिंह, डॉ.अनूप कुमार, डॉ. श्याम सिंह, जयेंद्र जायसवाल. सुभाष श्रीवास्तव, राहुल त्रिपाठी, राकेश यादव, मीनू त्रिपाठी, सृष्टी गुप्ता, रत्नेश कुमार त्रिपाठी यांच्यासह केंद्राचे कर्मचारी, विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित होते.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305